

## SHRI SUDHANSHU BISWAS

Shri Sudhanshu Biswas is a devoted son of India. His life is a classic example of living for others. He spent his early life fighting with Britishers to free his motherland. Post-independence, his efforts in rehabilitation of thousands of refugees were exemplary. Since 1970's, he has dedicated his life to man making education at the grass root level and providing vocational training to rural youths. He is a tireless silent worker who is changing lives of the poor in distant villages of India.

2. Born on March 18, 1917 in the undivided Bengal, Shri Biswas though hailed from a rich family, since his childhood he empathized for the down trodden. Since his boyhood, he was inspired by freedom fighters such as Shri Aurobindo Ghosh and Shri Barin Ghosh. Even at the age of 100 now he considers them as his 'Guru'. With the dream of freeing India, he left home when he was in Class VII. He was mentored by revolutionist Smt. Kalyani Das (Bhattacharyya) and Smt. Bina Das. The nationalist sisters were the daughters of Shri Beni Madhab Das, mentor and teacher of Netaji Subhash Chandra Bose. He joined the famous revolutionary group 'Anushilan Samity'. Soon, he was playing the critical role of carrying letters, arms and bombs – because of his teen age British police never suspected him. In 1939, he was entrusted to throw bombs at the Albert Hall in Calcutta. After completing this assignment, he had to evade many police chases though he was hit by the bullet once. He had to hid in distant places of East Bengal. Next, in 1942 he again was caught in a fierce gun battle with the British police in Birbhum district.

3. Shri Biswas was tortured and kept in the Alipore jail for 5 years and freed only in early 1947. It is here he was drawn to the teachings of Sri Ramakrishna and Swami Vivekananda. For the next phase of his life he made oneness to “Serve Man Serve God”. As the country was celebrating newly gained independence, since July 1947 to the next few years he rehabilitated thousands of refugee families. Although a bachelor throughout his life, seeing the plight he adopted six orphaned girls, educated and married off all of them. Now the daughters are living happily and supporting Sri Biswas' noble work through their children.

4. In late 1950's, to fund his social work, Shri Biswas started a plastic business and it flourished with God's grace. He started providing food, cloth, shelter, and livelihood to hundreds of rural people in South 24 Paragans and Sunderban. In the next 10 years, he opened 18 free schools in remote villages and ran them for more than two decades. Now they have been transferred to the State Government and functioning as High schools.

5. In 1973, Shri Biswas founded Sri Ramakrishna Sevashram at Ramkrishnapur village in South 24 Paraganas in West Bengal to provide value based education among orphan and destitute boys. Almost a thousand student have stayed, studied and became self-sustained through the Ashram. He himself took academic classes. In the last two decades, it has also sheltered abandoned rural poor old citizens. He learnt Homeopathy in his sixties to treat villagers free of cost. Since the last fifteen years, the Ashram also provides much needed emergency service via an Ambulance van. At this ripe age, he is ever compassionate to the poor families and hence started vocational training program in 2015. Hundreds of rural youths have passed courses in health assistance, mobile repairing, electrical and sewing. Almost 50 percent of these rural young girls and boys have found jobs or started their own business.

6. Shri Biswas is seva personified. A person whose entire life has been spent loving and caring others. He has run his Ashram without any major political backing or corporate support, it is for his own countrymen – supported by common citizens. He rejected taking 'Tamra Patra' and freedom fighter pension, as he has worked for India's freedom out of love to his motherland and not for any form of benefits. That love has magnified post-independence, as till date he is more devoted to fight poverty.



# श्री सुधांशु बिश्वास

श्री सुधांशु बिश्वास भारत भूमि के निष्ठावान सपूत हैं। आपका जीवन दूसरों के लिए जीने का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। आपने अपना प्रारंभिक जीवन मात्रभूमि की आजादी के लिए अंग्रेजों से लड़ते हुए बिताया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, हजारों शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए आपके प्रयास उल्लेखनीय हैं। 1970 से, गरीबों को शिक्षित करने तथा ग्रामीण युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए आपने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। आप एक ऐसे अथक मूक कार्यकर्ता हैं जो भारतवर्ष के दूरस्थ गांवों के गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए लगातार कार्य कर रहें हैं।

2. आपका जन्म 18 मार्च, 1917 में अविभाज्य बंगाल में हुआ। हालांकि आप एक सम्पन्न परिवार से संबंधित हैं, फिर भी बचपन से ही अति विपन्न लोगों के प्रति आपकी अत्यधिक सहानुभूति थी। अपनी किशोरावस्था से ही आप श्री अरविंद घोष तथा श्री बरीन घोष जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरित हुए। आज 100 वर्ष की आयु में भी आप उन्हें अपना 'गुरू' मानते हैं। भारत को आजाद कराने के सपने के साथ आपने सातवीं कक्षा में ही घर छोड़ दिया था। क्रांतिकारी श्रीमती कल्याणी दास (भट्टाचार्या) तथा श्रीमती बीना दास आपके परामर्शदाता रहे हैं। ये राष्ट्रवादी बहनें श्री बेनी माधव दास की बेटियां थीं जो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के परामर्शदाता और गुरू थे। आपने, प्रसिद्ध क्रांतिकारी दल 'अनुशीलन समिति' को ज्वाइन किया और जल्द ही, आप पत्र, बंदूकें तथा गोला बारूद लाने - ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य करने लगे क्योंकि आपकी किशोरावस्था के कारण ब्रिटिश पुलिस आप पर कभी शक नहीं करती थी। 1939 में, आपको कलकत्ता के अलर्बट हॉल में बम फेंकने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूरा करने के पश्चात आपको पुलिस की धर-पकड़ से बचते हुए रहना पड़ा। हालांकि, एक बार आपको ऐसे में गोली भी लग गई। आपको पश्चिम बंगाल के दूरस्थ इलाकों में छिपकर रहना पड़ा। फिर, 1942 में बीरभूम जिले में ब्रिटिश पुलिस के साथ हुई भीषण मुठभेड़ में आप पकड़े गए।

3. आपको प्रताड़ित किया गया और 5 वर्षों के लिए अलीपुर जेल में रखा गया और 1947 के प्रारंभ में आपको रिहा किया गया। यहां पर ही आप श्री रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानंद के उपदेशों की ओर आकृष्ट हुए। अपने जीवन के अगले पड़ावके लिए आपने "मानवता की सेवा, ईश्वर की सेवा" को अपने जीवन का एकमात्र ध्येय बना लिया। जिस समय देश नई-नई मिली आजादी के उत्सव को मना रहा था, उस समय आप जुलाई 1947 से अगले कुछ वर्षों तक हजारों शरणार्थी परिवारों के पुनर्वास का कार्य कर रहे थे। हांलाकि, आप आजीवन अविवाहित रहे, तथापि, परिस्थिति को देखते हुए आपने छह अनाथ लड़कियों को गोद लिया, उन्हें पढ़ाया और उन सभी का विवाह सम्पन्न किया। आज वे बेटियां खुशी से जीवन यापन कर रहीं हैं और अपने बच्चों के माध्यम से आपको नेक कार्य में सहयोग दे रहीं हैं,

4. 1950 के आखिर में,अपने इस सामाजिक कार्य के लिए धन की व्यवस्था करने के लिए आपने प्लास्टिक का कारोबार शुरू किया और ईश्वर की कृपा से आपका कारोबार खूब फला-फूला। आपने दक्षिणी 24 परगना तथा सुंदरबन के सैंकड़ों ग्रामीण लोगों को भोजन, कपड़े, आशियाना तथा आजीविका प्रदान करना आरंभ किया। अगले 10 वर्षों में, आपने दूरस्थ गांवों में 18 मुफ्त विद्यालय खोले और उन्हें दो दशक से भी अधिक समय तक चलाया। अब उन्हें राज्य सरकार को सौंप दिया गया है और वे हाई स्कूल के रूप में कार्य कर रहे हैं।

5. 1973 में, आपने अनाथ तथा निराश्रित लड़कों को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए, रामकृष्णापुर गांव, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में श्री रामाकृष्णा सेवाश्रम की स्थापना की। आश्रम के माध्यम से लगभग एक हजार छात्र वहां रहे, पढ़े तथा आत्मनिर्भर बने। आप स्वयं शैक्षिक कक्षाएं लेते थे। पिछले दो दशकों में, वहां बेघर ग्रामीण गरीब वृद्ध नागरिकों को आश्रय दिया गया। आपने अपने 60 के दशक में होम्योपेथी सीखी ताकि आप ग्रामीणों का निशुल्क इलाज कर सकें। पिछले पंद्रह वर्षों से, यह आश्रम एम्बुलेंस वैन के द्वारा आपातकालीन सेवा भी प्रदान कर रहा है। इस वृद्धावस्था में भी, आप गरीब परिवारों के प्रति करूणामय हैं और इसलिए, आपने 2015 में व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया। सैंकड़ों ग्रामीण युवाओं ने स्वास्थ्य सहायता, मोबाइल रिपयेरिंग, इलेक्ट्रिकल तथा सिलाई के पाठ्यक्रम पास किए हैं। इन ग्रामीण युवा लड़कियों और लड़कों में से लगभग 50 प्रतिशत को नौकरी मिल गई है या उन्होंने अपना स्वयं का व्यवसाय आरंभ कर दिया है।

6. आपका जीवन सेवा भाव से समर्पित रहा है। आप ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं जिसका सम्पूर्ण जीवन दूसरों के प्रति प्रेम लुटाने और सेवा करने में ही बीता है। आप अपना आश्रम बिना किसी बड़े राजनैतिक समर्थन अथवा कॉरपोरेट सहयोग के चला रहे है, यह आश्रम आपके अपने ग्रामीण देशवासियों के लिए हैं जिसमें आम नागरिक सहयोग देते हैं। आपने 'ताम्र पत्र' तथा स्वतंत्रता सेनानी पेंशन लेने से इंकार कर दिया क्योंकि आपने देश की आजादी के लिए जो कार्य किया वह अपनी मातृभूमि के लिए आपके प्यार के लिए किया, किसी लाभ प्राप्ति के लिए नहीं किया। स्वतंत्रता के बाद आपके देश प्रेम में और वृद्धि हुई है और आज भी आप गरीबी खत्म करने के लिए समर्पित रूप से संघर्षरत हैं।